

दि कार्मिक पोर्ट

वर्ष : 5, अंक : 22

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 22 जनवरी से 28 जनवरी 2020

पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

देश के 12 पर्वतीय प्रदेशों में हिमालयी पर्यावरण के अनुरूप बनेगी पर्यटन नीति

अल्पोड़ा। हिमालयी प्रदेशों के पर्यावरण संरक्षण को गठित हिमालयी राज्य क्षेत्रीय परिषद अब पर्यटन नीति भी तय करने में अहम भूमिका निभाएगा। इसके तहत उत्तराखण्ड समेत देश के 12 हिमालयी प्रदेशों के विकास को ध्यान में रखते हुए पांच अहम विषयों पर गहन अध्ययन शुरू किया जा रहा है। इसका मकसद हिमालयी राज्यों की भौगोलिक, सामाजिक व पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार पर्यटन नीति तैयार करना है।

विस्तृत अध्ययन कर वैज्ञानिक पर्यावरण हित से जुड़े युद्धों को कंट्रीय स्तर पर मजबूती से रख सकेंगे और इसी आधार पर राष्ट्रीय कार्ययोजना भी बनेगी। इस पूरी मुहिम में राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण शोध संस्थान कोसी कटारमल (अल्पोड़ा) अहम भूमिका निभाएगा। मित्र राष्ट्र नेपाल के वैज्ञानिक भी अध्ययन का हिस्सा बनेंगे। परिषद ही नोडल एजेंसी रहेगी जो संबंधित राज्यों की



समस्याओं को प्रभावी ढंग से केंद्र सरकार के समक्ष रखेगी।

उत्तराखण्ड, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, अरुणाचल, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, असम के दो जिले दीमा हसाओं व करबी आंगलोंग तथा पश्चिम बंगाल के दो जिले दार्जिलिंग व कलिङ्गोंग।

दरअसल, हिमालयी राज्यों के सतत विकास को पृथक परिषद की वकालत वर्ष 2000

में उत्तराखण्ड गठन के बाद से ही तेज होने लगी थी। देश दुनिया को सर्वाधिक पर्यावरणीय सेवा देने वाले उत्तराखण्ड को ग्रीन बोनस की पुरजोर मांग उठाई जाती रही है। बीते वर्ष नीति आयोग की पहल पर हिमालय क्षेत्रीय परिषद की नींव रखी गई थी जिस पर अब अमल शुरू हो रहा है।

इन पांच विषयों पर अध्ययन हिमालयी राज्यों में जलस्रोत

सूचीबद्ध होंगे, मृतप्राय स्रोतों का होगा पुनर्जनन

भौगोलिक, सामाजिक व पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप पर्यटन विकास

पर्वतीय कृषि तकनीक का सुधारीकरण

कौशल विकास व उद्यमिता विकास से पलायन रोकना

पर्यावरणहित में विकास को गति द त्वरित करें व व्यावहारिक फैसले

ये होंगे बड़े लाभ हिमालयी राज्यों की भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियों के मद्देनजर ढांचागत विकास होगा। सभी सीएम, प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिक व विशेषज्ञ एक डेरेक्ट पर आएंगे। साझा विचार से पर्यावरण हित व विकास की राह तलाशेंगे। जलधारों, झरनों व स्रोतों की जीआइएस मैपिंग होगी।

देशहित में बन सकेगी कार्ययोजना

डॉ. आरएस रावल, निदेशक जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान कोसी कटारमल अल्पोड़ा ने बताया कि भारतीय हिमालयी राज्यों के साथ ही इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटरेग्रेटेड मार्टिंग डेवलपमेंट (इसीमोड़) काठमांडू (नेपाल) के वैज्ञानिक भी मिलकर काम करेंगे। हिमालयी राज्य क्षेत्रीय परिषद के काम शुरू करने से हिमालयी पर्यावरण बचाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्ययोजना तैयार करने में बड़ी मदद मिलेगी।

सभी देशवासियों, विज्ञापनदाताओं,

पाठकों एवं स्नहीजनों को
दि कार्मिक पोर्ट

समाचार पत्र की ओर से

गणतंत्र दिवस की

हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं।

-संपादक

बड़ी संख्या में जहरीला पानी पी रहे अमेरिकी

वाशिंगटन। दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के नागरिकों को भी संक्रमित पानी पीने को मजबूर होना पड़ रहा है। एक पर्यावरण एजेंसी ने दावा किया है कि देश में मियामी, फिलाडेल्फिया और न्यू अर्लिंगन्स सहित कई जगहों पर पानी में फॉरेवर केमिकल्स के प्रमाण मिले हैं। फॉरेवर कमिकल या PFA संक्रमण का ऐसा प्रकार जो एक बार पानी में शामिल हो जाए तो फिर खूब नहीं होता। इस तरह के संक्रमण से केसर, लीवर डैमेज, गर्भाशय रोग और अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा बना रहता है।

ये रिसर्च अमेरिकी पर्यावरण संस्था Environmental Working Group ने की है। इस

रिसर्च के मुताबिक करीब 1 करोड़ 10 लाख अमेरिकी गंभीर बीमारियों के खतरे से जूझ रहे हैं। संक्रमित पानी हर दिन उनकी जिंदगी पर खतरे के साथ की तरह मंडरा रहा है। EWG के सीनियर साइटिस्ट डेविड एंडर्वू ने बताया है कि PFA केमिकल्स से संक्रमित पानी को बचा पाना तकरीबन नामुमकिन है। इन केमिकल्स की पर्यावरण में मौजूदगी पानी को दूषित कर देती है। कुछ अमेरिकी राज्य बुरी तरह इसकी चपेट में आ चुके हैं। एंडर्वू के मुताबिक इन केमिकल्स का इस्तेमाल टेफ्लॉन, स्कॉर्चगार्ड और फायरफ्राइटिंग फोम जैसे प्रोडक्ट्स में धड़ले के साथ किया जाता है।

क्या आप जानते हैं 26 जनवरी को लेकर ये दिलचस्प तथ्य

पूरे देश में गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी धूमधाम के साथ मनाई जाती है। इस दिन देशभर में गरिमामय आयोजन होते हैं, लेकिन गणतंत्र दिवस को लेकर कुछ बेहद ही दिलचस्प तथ्य हैं जो शायद ही आप जानते होंगे, आईये जानते हैं 26 जनवरी को लेकर कुछ दिलचस्प फैक्ट्स।

गणतंत्र दिवस की भव्य परेड देखने के लिए 26 जनवरी पर राजपथ से लेकर लालकिले तक परेड मार्ग पर हर साल 2 लाख से ज्यादा लोगों की भीड़ जुटती है।

परेड में राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री से लेकर आम और खास सभी शामिल होते हैं।

सरकार द्वारा भारत समेत कई राष्ट्रों से अतिथियों को विशेष तौर पर आमंत्रित किया जाता है।

साल 2015 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा भी गणतंत्र दिवस परेड में शामिल हो चुके हैं।

26 जनवरी पर गणतंत्र दिवस परेड की शुरूआत 1950 में आजाद भारत का सर्विधान लागू होने के साथ हुई थी।

1950 से 1954 तक गणतंत्र दिवस की परेड राजपथ पर न होकर, चार अलग-अलग जगहों पर हुई थीं। 1950 से 1954 तक गणतंत्र दिवस परेड का आयोजन क्रमशः इरीवन स्टेडियम (नेशनल स्टेडियम), किंसवे, लाल किला और रामलीला मैदान में हुआ था।

साल 1955 से गणतंत्र दिवस परेड का आयोजन राजपथ पर शुरू किया गया। तब राजपथ को 'किंसवे' के नाम से जाना जाता था। तब से ही राजपथ इस आयोजन की स्थाई जगह बन चुका है।

26 जनवरी 1950 को

पहले गणतंत्र दिवस समारोह में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डॉ. सुकर्णो विशेष अतिथि बने थे।

1955 में राजपथ पर आयोजित समारोह में पाकिस्तान के गवर्नर जनरल मलिक गुलाम मोहम्मद विशेष अतिथि के तौर पर बुलाया गया था।

समारोह की शुरूआत राष्ट्रपति के आगमन के साथ होती है। राष्ट्रपति अपनी विशेष कार से, विशेष बुड़सवार अंगरक्षकों के साथ आते हैं।

विशेष बुड़सवार अंगरक्षक समेत वहाँ मौजूद सभी लोग तिरंगे को सलामी देते हैं। फिर राष्ट्रगान की शुरूआत होती है।

राष्ट्रगान के दौरान

21 तोपों की

सलामी दी जाती है।

यह सलामी 52 सेकंड के राष्ट्रगान के खत्म होने के साथ पूरी होती है।

तीरों की यह सलामी भारतीय सेना की 7 तोपों द्वारा दी जाती है, जिन्हें पौन्डर्स कहा जाता है। प्रत्येक तोप से तीन राउंड फायरिंग होती है।

ये तोपें 1941 में बनी थीं और सेना के सभी आयोजनों में इन्हें शामिल करने की परंपरा है।

26 जनवरी की परेड में शामिल होने वाले सभी दल तकरीबन 600 घंटे तक अभ्यास करते हैं। परेड में शामिल

सभी दल करीब 6

महीने पहले ही तैयारी में जुट जाते हैं।

परेड में शक्ति प्रदर्शन के लिए शामिल होने वाले टैंकें, हथियार, बख्तरबंद गाड़ियों और अन्य अत्याधुनिक उपकरणों आदि के लिए इंडिया गेट परिसर में एक विशेष शिविर बनाया जाता है।

इन सभी टैंकों, हथियार, बख्तरबंद गाड़ियों और अन्य अत्याधुनिक उपकरणों की जांच और रंग-रोगन आदि का कार्य 10 चरण में पूरा किया जाता है।

26

जगहों पर जज उपस्थित होते हैं, ये जज प्रत्येक दल को 200 मापदंडों पर नंबर देते हैं। इसके आधार पर सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग दल का चुनाव होता है। इसमें जीतना बड़े गैरव की बात है।

परेड में भाग लेने वाले सेना के जवान भारत में बनी इंसास राइफल लेकर चलते हैं। विशेष सुरक्षा बल के जवान इजरायल में बनी तवोर (अङ्गूष्ठक) राइफल लेकर चलते हैं।

राजपथ पर मार्च पास्ट खत्म होने का बाद परेड का सबसे रोचक हिस्सा शुरू होता है, जिसे 'फ्लाई पास्ट' कहते हैं।

'फ्लाई पास्ट' में 41 फाइटर प्लेन और हेलिकॉप्टर शामिल होते हैं, जो वायुसेना के अलग-अलग कंप्लेक्स से उड़ान भरते हैं।

सरकार ने वर्ष 2001 में गणतंत्र दिवस समारोह पर करीब 145 करोड़ रुपए खर्च किए थे।

वर्ष 2014 में ये खर्च बढ़कर 320 करोड़ रुपए पहुंच गया था।

मतलब 2001 से 2014 के बीच 26 जनवरी समारोह के आयोजन में लगभग

54.51 फीसद की दर से खर्च में इजाफा हुआ है।



गणतंत्र एक ऐसी लोकतांत्रिक व्यवस्था का जनक भारत ही है। इसकी शुरुआत भारत के बिहार राज्य के वैशाली से हुई है। उन दिनों ये प्रांत वैशाली गणराज्य के नाम से जाना जाता था।

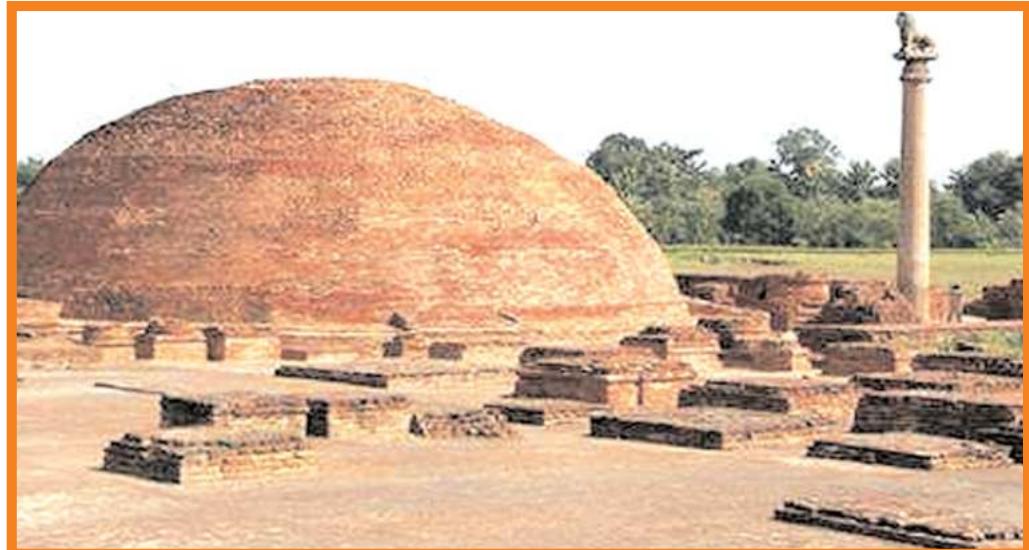
दुनिया का पहला गणराज्य था प्राचीन भारत का वैशाली

देश अपना 71वां गणतंत्र दिवस मनाएगा। 26 जनवरी 1950 को भारत सरकार अधिनियम (1935) के स्थान पर हमारा संविधान लागू हुआ था। लेकिन भारत में प्राचीन काल में कई राज्य गणतंत्र सिस्टम से संचालित होते थे। सही मायनों में दुनिया में जहां भी गणतांत्रिक व्यवस्था लागू दिखती है, वो प्राचीन भारत की देन है।

प्राचीन भारत में सबसे पहला गणराज्य वैशाली था। बिहार के इस प्रांत को वैशाली गणराज्य के नाम से जाना जाता था।

ऐतिहासिक प्रमाणों के मुताबिक ईसा से लगभग छठी सदी पहले वैशाली में ही दुनिया का पहला गणतंत्र यानी 'गणराज्य' कायम हुआ था। आज जो लोकतांत्रिक देशों में अपर हाउस और लोअर हाउस की प्रणाली है, जहां सांसद जनता के लिए पॉलिसी बनाते हैं। ये प्रणाली भी वैशाली गणराज्य में था। वहां उस समय छोटी-छोटी समितियां थीं, जो गणराज्य के अंतर्गत आने वाली जनता के लिए नियमों और नीतियों को बनाते थे।

अमेरिका में होने वाले चुनावों के बक्तव्य में प्रेसिडेंसियल डिबेट्स की खबर देखने को मिलती है। ऐसी ही बहसें आज से लगभग 2500 साल पहले वैशाली महाजनपद की राजधानी थी। महाजनपद का मतलब प्राचीन भारत के शक्तिशाली



के लिए होती थीं। कई इतिहासकारों का ये भी मानना है कि अमेरिका में जब सोलीकंट्र का ताना-बाना बुना जा रहा था, तब वहां के पॉलिसी-मेकर्स के दिमाग में वैशाली के गणतंत्र का मॉड्यूल चल रहा था।

वैशाली में गणतंत्र की स्थापनादरअसल वैशाली नगर वज्जी महाजनपद की राजधानी थी। महाजनपद का मतलब प्राचीन भारत के शक्तिशाली

राज्यों में से एक होता था। ये क्षेत्र प्रभावशाली था अपने गणतांत्रिक मूल्यों की बजह से वैशाली में गणतंत्र की स्थापना लिच्छवियों ने की थी। लिच्छवियों का संबंध एक हिमालयन ट्रॉफ लिच्छ से था। वैशाली गणराज्य को लिच्छवियों ने खड़ा किया था और ये इसलिए किया गया था, ताकि बाहरी आक्रमणकारियों से बचा जा सके। और अगर कोई बाहर से आक्रमण करे तो गणराज्य को जनता का

पूरा समर्थन हासिल हो।

गणराज्य बनने के बाद ठीक ऐसा ही हुआ था। कलांतर में वैशाली एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा। इस प्रकार एक नई प्रणाली ईजाद हुई, जिसे हम गणतंत्र कहते हैं। इस दुनिया के ज्यादातर देशों ने अपनाया है और मॉडन ग्लोबल वर्ल्ड का बेस्ट सिस्टम माना गया। आज ईंडिया हो या यूरोप का कोई देश या फिर अमेरिका, सब इसी सिस्टम को मानते हैं, जिसकी शुरुआत आज से 2600 साल पहले भारत के वैशाली में हुई थी।

हिमालय की तराई से लेकर गंगा के बीच फैली भूमि पर लिच्छवियों के संघ द्वारा गणतंत्र सिस्टम की शुरुआत की गई थी, जिसका नाम वैशाली गणराज्य था। वैशाली को कुछ इतिहासकार गणतंत्र का मक्का भी कहते हैं।

आज के गणराज्य में और वैशाली के गणराज्य में बहुत से फर्क हैं, पर मैंन आइडिया वहीं से लिया गया था। वैशाली गणराज्य को नियंत्रित करने के लिए कुछ समितियां बनाई गई थीं, जो हर तरह के कामों पर बारीकी से नजर रखती थीं। ये समितियां समय के हिसाब से गणराज्य की नितियों में तब्दीली लाती थीं, जो काम आज के समय में किसी लोकतांत्रिक देशों में जनता के द्वारा चुने गए सांसद करते हैं।



ग्लोबल वार्मिंग के चलते सफेद से हरा होता जा रहा है हिन्दुकुश हिमालय



ज लवायु परिवर्तन के कारण हिंदू कुश हिमालय में तेजी से बदलाव आ रहा है। जो न केवल पेड़-पौधों को बल्कि पूरे इकोसिस्टम को प्रभावित कर रहा है। माउंट एवरेस्ट और हिमालय के के चारों ओर ग्लोबल वार्मिंग के असर को साफ देखा जा सकता है। कभी बर्फ की सफेद चादर में ढंके रहने वाले इस क्षेत्र पर अब घास और झाड़ियाँ नजर आने लगी हैं। जोकि स्पष्ट रूप से इशारा करता है कि जलवायु में आ रहा परिवर्तन इस पवत श्रेष्ठता पर विनाशकारी असर डाल रहा है। इसके महत्व का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि यह क्षेत्र 42 लाख किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है जोकि एशिया के दस सबसे बड़ी नदियों को पोषित करता है। साथ ही 140 करोड़ लोगों की जल सम्बन्धी जरूरतों को पूरा करता है। इस विशाल क्षेत्र में उगने वाले पेड़-पौधों की मात्रा को मापने के लिए वैज्ञानिकों ने उपग्रह से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया है। इस निर्जन स्थान के बारे में बहुत कम

जानकारी उपलब्ध है। जहां तक इसान का पहुंच पाना कठिन है। पेड़ों और बर्फ के बीच का यह क्षेत्र आमतौर पर मौसमी बर्फ से ढंका रहता है जहां कहीं-कहीं पर छोटे पौधे देखने को मिल जाते हैं।

वैज्ञानिकों ने उस स्थान का अध्ययन किया है जो पांच से 15 गुना तक स्थायी ग्लेशियरों और बर्फ से ढंका रहता है। इसे समझने के लिए एक्सेटर विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने नासा के लैंडसैट उपग्रह से 1993 से 2018 के बीच प्राप्त चित्रों का विश्लेषण किया है। इसे समझने के लिए शोधकर्ताओं ने समुद्रतल से 4,150 से 6,000 मीटर ऊंचाई वाले हिस्सों को चार भागों में बांट कर अध्ययन किया गया है। जो स्पष्ट रूप से दिखाता है कि माउंट एवरेस्ट के आसपास के क्षेत्र में पौधे की मात्रा बढ़ रही है। हालांकि अलग-अलग ऊंचाई और स्थान पर पौधों की मात्रा में अंतर पाया गया। 5,000-5,500 मीटर की ऊंचाई पर वनस्पति में सबसे अधिक वृद्धि देखने को मिली।

माउंट एवरेस्ट के आसपास

शोधकर्ताओं ने वनस्पति में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। झाड़ियों और घास में हो रही इस वृद्धि का क्या प्रभाव होगा, अभी तक साफ नहीं है। लेकिन वैज्ञानिकों का मत है कि यह इस क्षेत्र में बाढ़ के खतरे को बढ़ा सकता है।

अत्यधिक संवेदनशील है हिमालय का पारिस्थितिकी तंत्र। हालांकि यह अध्ययन इन परिवर्तनों के कारणों की जांच नहीं करता। लेकिन निष्कर्ष से पता चलता है कि वलाइमोट चेंज के चलते हिमालय क्षेत्र तेजी से गर्म हो रहा है और यही वजह है कि परिस्थितियां पेड़ पौधों के पनपने के अनुकूल बन रही हैं। गौरतलब है कि इससे पहले भी कई अध्ययन इस और इशारा कर चुके हैं कि हिमालय का पारिस्थितिकी तंत्र वनस्पति में आ रहे जलवायु सम्बन्धी बदलावों के लिए अत्यधिक संवेदनशील हैं।

एक्सेटर यूनिवर्सिटी के इंस्टिट्यूट ऑफ एनवायरनमेंट एंड स्टेनोबिलिटी की डॉ करेन

एंडरसन ने बताया कि हिमालय क्षेत्र में बर्फ के पिघलने पर बहुत सारे शोध किए गए हैं। उनमें से एक 2016 से 2018 के बीच हिमालय क्षेत्र में बर्फ के पिघलने की दर दोगुनी हो गई है। उनके अनुसार दुनिया भर में मुख्य पर्वत श्रंखलाओं पर घटती बर्फ को समझना और उसकी निगरानी करना बहुत जरूरी है। चूंकि यह उप-पारिस्थितिक तंत्र स्थायी बर्फ की तुलना में बहुत बड़े भूभाग पर फैला हुआ है, जिसके बारे में हम बहुत कम जानते हैं। साथ ही यह जलापूर्ति को किस तरह प्रभावित करता है इसके बारे में भी बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। यहां मौसम के अनुसार बर्फ गिरती और पिघलती है। हमें नहीं पता कि वनस्पति में आ रहे इस बदलाव का यहां के जल-च पर क्या प्रभाव पड़ेगा? लेकिन इसे समझना बहुत जरूरी है क्योंकि यह क्षेत्र एशिया के बाटर टावर्स के नाम से जाना जाता है। जहां से एशिया की दस प्रमुख नदियां निकलती हैं।